ही करे, क्योंकि वे अध्यात्म ज्ञान के गम्भीर अनुशीलन में तत्पर रहते हैं। ब्राह्मण का कर्तव्य है कि अपना सारा जीवन ब्रह्मजिज्ञासा करने में उत्सर्ग कर दे। ब्रह्मजन वह है जो ब्रह्म का ज्ञाता हो; वही ब्राह्मण कहलाने के योग्य है। ब्राह्मणों को दान किया जाता है, क्योंकि नित्य भगवत्सेवा में लगे रहने से वे स्वयं धन का अर्जन नहीं कर सकते। वैदिक विधान में संन्यासी भी दान का सत्पात्र है। साधु द्वार-द्वार पर मधुकरी करते हैं। वे ऐसा धन-प्राप्ति के लिये नहीं करते; वरन् उनका उद्देश्य प्रचार करना है। यह पद्धति है कि वे द्वार-द्वार पर जाकर गृहस्थों को प्रगाढ़ अज्ञान-निद्रा से जगाते हैं। कुटुम्ब के प्रपंच में फंसे गृहस्थों को अपने जीवन के इस लक्ष्य का विस्मरण हो गया है कि हृदय में सोयी कृष्णभावना को उद्‌बुद्ध करना है। अतः संन्यासियों का कर्तव्य बनता है कि भिक्षा के लिए उनके घरों में जाकर उनमें कृष्णभावना का संचार करें। वेद आह्वान कर रहे हैं कि जागृत होकर मानव योनि के प्रयोजन को सिद्धकर लेना चाहिये। संन्यासी इसी ज्ञान और साधन-पद्धति का प्रचार करते हैं। अतएव इन संन्यासी, ब्राह्मण, आदि सत्पात्रों को ही दान करना चाहिए; स्वेच्छापूर्वक जिस-किसी को नहीं।

**यशः** का स्वरूप श्रीचैतन्य महाप्रभु के अनुसार होना चाहिये। उनका कहना है कि जो मनुष्य शुद्धभक्त के रूप में प्रख्यात हो जाता है, उसे शाश्वत् यश की प्राप्ति होती है। यही सच्चा यश है और कृष्णभावनाभावित महापुरुष ही यथार्थ में यशस्वी है। जिसे यह यश नहीं है, वह कलंकित **(अयशः)** है।

उपरोक्त सारे गुण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में मानव और देव समाजों में प्रकट रहते हैं। अन्य लोकों में रहने वाले नाना प्रकार के मनुष्यों में भी इनकी अभिव्यक्ति है। कृष्णभावना में उन्नति के अभिलाषी के लिए श्रीकृष्ण इन गुणों का सृजन करते हैं, जिससे साधक अपने अन्तर में उन्हें स्वयं विकसित कर लेता है। भाव यह है कि भगवान् के विधान के अनुसार भगवद्‌भक्ति-परायण मनुष्य में सम्पूर्ण सद्‌गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है।

हम जो कुछ अच्छा-बुरा देखते हैं, श्रीकृष्ण उस सब के मूल हैं। इस संसार में अभिव्यक्त होने वाला ऐसा कोई पदार्थ नहीं है, जो श्रीकृष्ण में स्थित न हो। इसका नाम ज्ञान है। वस्तुओं में परस्पर भेद होते हुए भी हमें यह जान लेना चाहिये कि सब कुछ श्रीकृष्ण से ही आता है।

**महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।**
**मद्‌भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः।।६।।**

**महर्षयः**=महर्षि; **सप्त**=सात; **पूर्वे**=पूर्व में होने वाले; **चत्वारः**=चार; **मनवः**=मनु; **तथा**=भी; **मद्‌भावाः**=मुझ से उत्पन्न; **मानसाः**=संकल्प से; **जाताः**=उत्पन्न हुए हैं; **येषाम्**=जिनकी; **लोके**=लोकों में; **इमाः**=यह सम्पूर्ण; **प्रजाः**=प्रजा है।